INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

September 2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue 274

## भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य का योगदान

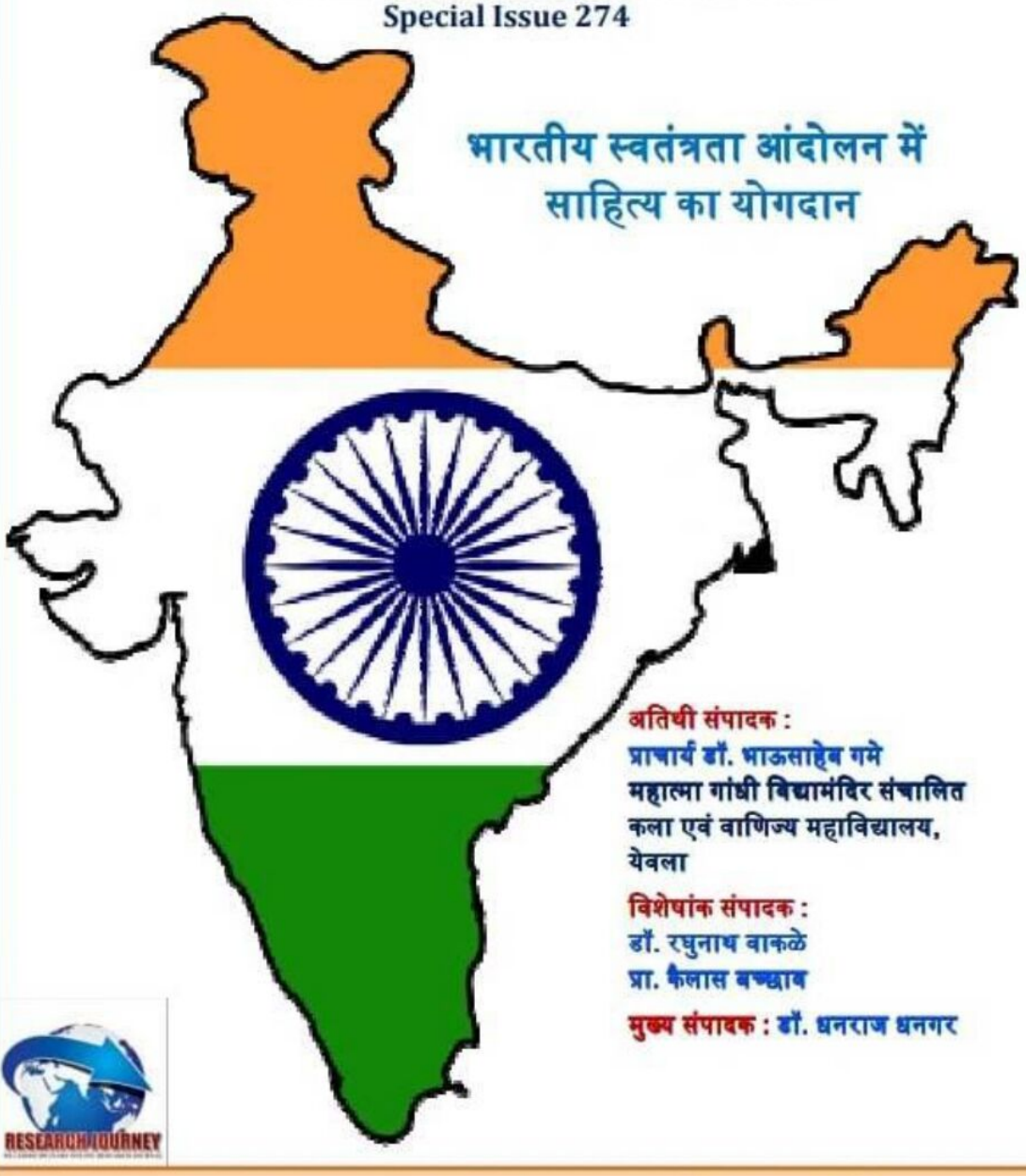

अतिथी संपादक :
प्राचार्य डॉ. भाऊसाहेब गमे
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
येवला

विशेषांक संपादक :
डॉ. रघुनाथ वाकळे
प्रा. कैलास बच्छाव

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

August-2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

Special Issue 271

# हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

विशेषांक संपादक
प्रा. रवींद्र ठाकरे
हिंदी विभागाध्यक्ष,
समाजश्री प्रशांदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
नामपूर, तह. सटाणा, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

*- Chief & Executive Editor*

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 1000/-

September-2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue 274

## भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य का योगदान

अतिथी संपादक :
प्राचार्य डॉ. भाऊसाहेब गमे
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला
मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

विशेषांक संपादक :
डॉ. रघुनाथ वाकळे
प्रा. कैलास बच्छाव
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला

*Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

*- Chief & Executive Editor*

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

*Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 1000/-

## अनुक्रमणिका


| अ.नं. | शीर्षक | लेखक /लेखिका | पृ. क्र. |
|---|---|---|---|
| | **हिंदी विभाग** | | |
| 1 | स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान | डॉ. नितीन पंडीत | 05 |
| 2 | काव्य विधा में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान | डॉ. वाल्मिक सूर्यवंशी | 08 |
| 3 | काव्य विधा में स्वतंत्रता आंदोलन | डॉ. भारती धोंगडे | 11 |
| 4 | आत्मकथाविधास्वतंत्रता आंदोलन के दौरान:एकअध्ययन | अनू पाण्डेय | 14 |
| 5 | काव्य विधा में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान (माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में) | डॉ. मालती शिंदे | 16 |
| 6 | दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति | डॉ. पूनम बोरसे | 19 |
| 7 | भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान | डॉ. मंगला भवर | 24 |
| 8 | मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान (वीरांगना झलकारी बाई के विशेष संदर्भ में) | प्रा. अशोक उघडे | 28 |
| 9 | छायावादी काव्य का स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान | प्रा. हर्षल बच्छाव | 32 |
| 10 | दिनकर के काव्य में स्वतंत्रता आंदोलन का योगदान | डॉ. राजेंद्र वाविस्कर | 37 |
| 11 | पत्रकारिता का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान | डॉ. रघुनाथ वाकळे | 43 |
| 12 | भारतीय स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान | प्रा. कैलास बच्छाव | 47 |
| 13 | स्वतंत्रता आन्दोलन में मैथिलीशरण गुप्त के काव्य का योगदान | प्रा.रवींद्र ठाकरे, प्रोफ. डॉ. अनिता नेरे | 50 |
| 14 | मैथिलीशरण गुप्तजी और भारत का स्वतंत्रता आंदोलन | डॉ. संदीप देवरे | 56 |
| 15 | राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिंदी कविता | श्री. निलेश पाटील | 59 |
| 16 | भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उपन्यास विधा का योगदान : पंकज सुब्बीर का उपन्यास 'ये वह सहर तो नहीं' में १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम | सविता मुंढे, डॉ. शशिकला साळुंखे | 66 |
| 17 | हिंदी कवियों कास्वतंत्रता आंदोलन में योगदान | डॉ. विष्णु राठोड | 69 |
| 18 | हिंदी काव्य विधा का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान | डॉ. मुख्त्यार शेख, श्री जयवंतराव पाटील | 73 |
| | **मराठी विभाग** | | |
| 19 | ७२ वे अ.भा.सा.संमेलन अध्यक्ष कविवर्य वसंत बापट यांच्या काव्यातील राष्ट्रीय जाणीवा | डॉ. शंकर बोऱ्हाडे, निलेश आहेर | 78 |
| 20 | स्वातंत्र्य आंदोलनातील साने गुरुजींच्या कवितांचे योगदान | डॉ. आनंदा सोनवणे | 83 |
| 21 | मराठी चरित्र - आत्मचरित्र वाङ्मयाचे भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलनातील योगदान | प्रा. नाना घुगे | 89 |
| | **English Section** | | |
| 22 | Kanthapura : A Piece of the Freedom Movement | Dr. Subhash Randhir | 93 |
| 23 | Folk Elements in Ghashiram Kotwal | Mr. Kushaba Salunke & Dr. Abdul Anees Abdul Rasheed | 95 |
| 25 | The Special Relationship between Hamlet and his Dead Dad | Prof. T. B. Bidgar | 100 |
| 26 | Heaven of Freedom : Tagore's Conception of Ideal Freedom | Dr. Manisha Gaikwad | 104 |
| 27 | Historical and Postmodern Perspectives of Partition through Chaman Nahal's 'Azadi' | Dr. Kamalakar Gaikwad | 109 |

# स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का योगदान

**डॉ. नितीन (धनंजय) दत्तात्रेय पंडीत**
सहायक प्राध्यापक
कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म.सोनवणे
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय सटाणा
ता.बागलाण जि.नाशिक
ई.मेल - panditdd@rediffmail.com
भ्रमरध्वनी- ९५०३२९८२४६

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन यह भारत को स्वतंत्रता दिलाने एवं अंग्रजों की गुलामी की जंजिरों से देश को आजादी दिलाने के लिए हर भारतीय जन-मानस अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार तन-मन-धन देकर सहयोग दे रहा था अनेक माध्यमों के द्वारा सभी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भाग ले रहे थे। इस आंदोलन में लोकतंत्र का चौथा स्तंभ पत्रकारिता की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

"पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है।"

यह 'महादेवी वर्मा' के कथन से स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका को समजा जा सकता है। पत्रकारों नें अपनी लेखनी के बल से समाज में ऐसी परिस्थिती का निर्माण किया कि सारा देश एक होकर देश के कोने-कोने से अंग्रेजों के शोषण एवं आत्याचारों का अन्याय का विरोध होने लगा।
अकबर इलाहाबादी कीं कुछ पक्तियाँ इस प्रकार है।

"खीचो न कमानों को न तलवार निकालों
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।"

सारे देश में ऐसी लहर दौडी कि देश के कोने-कोने से देश प्रेमियोंने अखबार एवं पत्रिकाओं के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त करना शुरु किया। सरकार के खिलाप आवाज उठने लगी। लेकिन अंग्रेजों के कठोर शासन एवं नितीयों के कारण तथा धन के अभाव से पत्र- पत्रिकाएँ बंद होती गयी किंतु नई-नई पत्र- पत्रिकाओं का प्रकाशन होता गया हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाओं ने सारे देश को एकसुत्र में बांधने का समाज कार्य किया। हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में पहला समाचार पत्र **'उदन्त मार्तण्ड'** ३० मई १८२६ को प्रकाशित हुआ। जिसके संपादक कानपुर के निवासी **पं.जुगलकिशोर शुक्ल** थे। यह साप्ताहिक समाचार पत्र हर मंगलवार को प्रकाशित होता था। तमाम विचारधाराओं का संकलन क्रांतिकारी एवं उदरवादी सभी के विचारों को प्रकाशित करने का यह साधन बना। चौराहे पर समूह इकट्ठा होता और अपनी बात पढता किंतु अंग्रजों ने १ डिसेंबर १९४५ में उसे बंद कर दिया इससे लोगों में खलबली मची विरोध आधिक तीव्र गती से होने लगा। सन् १८२९ में समाचार पत्र **'बंगदूत'** का प्रकाशन हुआ। इसके संपादक **राजाराम मोहनराय** थे यह चार भाषाओं में प्रकाशित हुआ। १)हिंदी २) अंग्रेजी ३) बंगाली ४) उर्दू किंतू इसमें उतनी प्रखरता एवं स्पष्टता नहीं थी जितनी उदन्त मार्तण्ड में थी। इसका झुकाव कुछ अंग्रेजो की मर्जी का था। सन् १९४५ में **'बनारस अखबार'** बनारस शहर से संपादीत हुआ। जिसका संपादन **शिवसितारे हिंद** ने किया यह उत्तर भारत के लोगों को संघटित करने के लिए बहुत बड़ा लाभदायक रहा क्योकि वह भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग ले सके और भारत को स्वतंत्रता दिलाने में उनका भी योगदान रहें। अपनी भूमिकाओं का निर्वाह करें बनारस अखबार के अस्थानिक संपादक **गोविंद रघुनाथराव थत्ते** (GRR) थे। इनका झुकाव उर्दू की तरफ था। पश्चात **'तारामोहन मित्र'** ने सन् १८५० में **'सुधाकर'** नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन किया। इसमें पूर्णत: हिंदी का प्रयोग हुआ इसमें काव्य के रुप

में अपने विचारो का निर्वाह शुध्द हिंदी में हुआ। इसके पश्चात **'श्यामसुंदर सेन'** ने कलकत्ता से सन् १८४५ में **'सुधावर्षण'** का प्रकाशन किया यह प्रतिदिन निकालते थे। हरदिन लोग विचारधारा को पढ़ते समझते थे यही से हरदिन पत्रिका का निकालना शुरु हुआ। सन् १८६७ में **कविवचन 'सुधा'** के नाम से 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' ने पत्रिका निकाली। यह बहुत ही प्रभावशाली रही इसमें पद्य के साथ गद्य भी शामिल हुआ। लोग जागृत हुए अंग्रेजों के खिलाफ अपने विचारों को विभिन्नता से अभिव्यक्त करने लगे। स्वतंत्रता आंदोलन में कविवचन सुधा का प्रभाव अधिक रहा एवं योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इन पत्रिकाओं में एवं स्वतंत्रता आंदोलन में एक वर्ग जो अछूता रह गया था उनके लिए कुछ काम करे वह वर्ग महिलाओं का वर्ग था उनके लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने १ जनवरी १९७४ में मासिक पत्रिका **'बालाबोधिनी'** का प्रकाशन किया। यह पत्रिका सिर्फ महिलाओं के लिए ही थी। अब स्वतंत्रता की मोहिम में आने के लिए महिलाओं के लिए इस पत्रिका का प्रकाशन किया। सन् १८७७ में **'हिंदी प्रदिप'** का प्रकाशन इलाहाबाद वर्तमानकाल का प्रयागराज से **बालकृष्ण भट** ने प्रकाशन किया लोंग अधिक जागृत हुए लोगों की भावना अधिक तीव्र होने लगी। सन् १८८५ में कांग्रेस की स्थापना हुई अब अंग्रेज सरकारने कांग्रेस के द्वारा लोगों को अपनी बात रखने के लिए साल में एक बार अधिवेशन लेना शुरु किया कलकत्ता शहर में पहला अधिवेशन हुआ।

बंकिमचंद्र चटर्जी ने गीत गाया

"वंदे मातरम् वंदे मातरम्"

"सुजलाम सुफलाम"

यह गीत आनंदमठ इस किताब से लिया गया है। जो बंकिमचंद्र चटर्जी ने लिखी थी। पश्चात वह हमारा राष्ट्र गान बना। सन् १९०७ सुरत में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ उसमें कांग्रेस का दो भागों में विभाजन हुआ। एक गरमदल और नरमदल क्रांतिकारी विचारधारावाली गरमदल और उदारवादी विचारधारा की नरमदल किंतु दोनों का लक्ष्य एक ही स्वतंत्रता प्राप्ती। भारत को स्वतंत्रता दिलाना यही दोनों का उद्देश्य था। सन् १९११ के अधिवेशन में 'राणी व्हिक्टोरिया' का आगमन हुआ 'रविंद्रनाथ टैगोर' का जन-गण-मन गीत उसके सामने प्रस्तुत किया गया यही गीत आगे चलकर हमारा राष्ट्रगान बना. सन् १९१३ में रविंद्रनाथ टैगोर को **'गीतांजली'** पर 'नोबेल' पारितोषिक प्राप्त हुआ। सन् १९२३ में **'मतवाला'** का प्रकाशन हुआ इसके प्रकाशन **'सुर्यकांत त्रिपाठी निराला'** थे **'जुही की कली'** सुर्यकांत त्रिपाठी ने लिखी यह मुक्त छंद की कविता थी। इससे लोग मुक्तकंठ से अपनी बात कहने लगे इससे लोगों को प्रेरणा मिली क्रातिकारी आंदोलन में क्रातिंकारियों में भगतसिंह, राजगुरु, सुकदेव आदि अनेक क्रांतिकारी भारतमाता के लिए अपने प्राणों की आहुती देने के लिए घर से बाहर आये अंग्रेजो को भारत देश से बाहर निकालने का संकल्प किया। बहुत सारे क्रांतिकारी अपने विचारो का प्रकट करणे के लिए एवं लोगों तक पहुचांने के लिए पत्रकारिता की शिक्षा प्राप्त करने लगे पत्रिकाओं का प्रकाशन करने लगे। म.गांधी और भगतसिंग के विचारों में मतभेद था टकराहट आती है रास्ते अलग, विचारधारा अलग लेकिन उद्देश्य एक था। इसी बीच रावी नदीं कें तटपर तिरंगा लहराया गया। २६ जनवरी १९३० को पहला तिरंगा लहराया किंतु उस तिरंगे का स्वरुप अलग था यही से २६ जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाने लगा। लेकिन यह स्वतंत्रता से पहले प्रतिवर्ष मनाया जाता था। मतलब १५ अगस्त १९४७ तक। आगे चलकर १४ अगस्त १९४७ में रात १२ बजे जवाहरलाल नेहरु ने रेडिओपर भाषण दिया कि "जब हम स्वतंत्रता मनाएगें स्वतंत्रता (स्वाधिनता) का अर्थ अपना अधिकार सारी जनता गहरी नींद में सो रही होगी और जब सुबह जाग कर देखेगी तो देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई होगी।" तिरंगे का सन्मान करनेवाले सब थे। अब राष्ट्रभाषा को लेकर प्रश्न उठता गया। हिंदी का नाम आगे आया तो हिंदी भाषा का कुछ लोगों ने विरोध किया। जी.एस अँगर ने विकल्प निकाला हिंदी को राजभाषा बनाया जाए राजभाषा का प्रस्ताव दिया उसका स्वीकार किया गया। किंतु राष्ट्रभाषा का नहीं राष्ट्रीय वस्तु बाध्यकारी होती है अर्थात अनिवार्य जैसे राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय वृक्ष, राष्ट्रीय

धरोहर, राष्ट्रीय ध्वज इनका अनादर होता है तो सजा होती है। हिंदी राजभाषा बनाई गई राजभाषा अर्थात कार्यालयीन भाषा घोषित हुई। संविधान के भाग १७ के अंतर्गत अनुच्छेद ३४३ से ३५१ तक में हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया और देवनागरी को लिपी के रुप में स्वीकार किया वह दिन १४ सितंबर १९४७ इसे हिंदी दिवस मनाया जाने लगा।

**निष्कर्ष :-**

इसतरह स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता का पत्रिकाओं का एवं पत्रकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। क्रांतिकारी पहले पत्रकारिता का सहारा लेकर अपने विचारों को लोगोंतक पहुचाने का कार्य करते थे यह पत्रकारिता की परंपरा आज भी निरंतर जारी है। इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। इस पत्रिकाओं ने लोगों के दिल में राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम जागृत किया। लोग अपना सर्वस्व देकर भारतमाता को स्वतंत्रता दिलाने के यज्ञ में शामिल हुए यह योगदान पत्रकारिता का ही है। इससे स्पष्ट हे की, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता का योगदान महत्वपुर्ण एवं अतुलनीय रहा है।

**संदर्भ:-**

1. हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार - लेखक - डॉ.ठाकुरदत्त शर्मा – अलोक
2. हिंदी पत्रकारिता की भूमिका - सतन कुमार - लोकसंवाद प्रकाशन, इंदौर
3. जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता - डॉ. अर्जुन तिवारी - जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. आनंदमठ - बंकिमचंद्र चटर्जी